International Journal of Applied Research 2015; 1(11): 237-240

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(11): 237-240
www.allresearchjournal.com
Received: 03-08-2015
Accepted: 05-09-2015

किरण ग्रोवर
एसो॰ प्रो॰,स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, डी॰ए॰वी॰ कॉलेज, अबोहर।

Correspondence
किरण ग्रोवर
एसो॰ प्रो॰,स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, डी॰ए॰वी॰ कॉलेज, अबोहर।

हिंदी के अन्तर्राष्ट्रीयकरण में प्रवासी लेखकों का योगदान

किरण ग्रोवर

सारांश
भूमंडलीकरण से प्रवास की प्रक्रिया एवं प्रवासी हिंदी साहित्य में भी विस्तार हुआ। हिंदी साहित्य में जिस प्रभावशाली ढंग से विदेशों में लिखे जाने वाले हिंदी साहित्य को पिछले दो–तीन दशकों में पहचान मिली है इसका कारण प्रवास की प्रक्रिया में आई निरन्तरता, विश्व बाजार, दूर संचार, कंप्यूटर क्रांति के साथ–साथ विश्वभर में फैले हिंदी के रचनाकारों का विभिन्न माध्यमों से साहित्यिक जुड़ाव व विचार विमर्श है। पत्रिकाओं द्वारा प्रवासी अंक निकाला जाना, प्रवासी रचनाकारों का सम्मेलन, प्रवासी पुरस्कार आदि प्रवासी हिंदी साहित्य की सत्ता और महत्ता को इंगित कर रहे हैं। विदेश में रहने वाले रचनाकारों की रचनाओं में अलग अलग देशों की विभिन्न परिस्थितियों का उल्लेख मिलता है जिससे हिन्दी साहित्य का अन्तर्राष्ट्रीय विकास होता है। प्रवासी हिंदी साहित्य की अपनी अलग संवेदना, विशिष्ट प्रवासी सोच है जोकि संस्कार के रूप में अपने परिवेश को ग्रहण करते हैं जिससे उनके दृष्टिकोण का आभास मिलता है। प्रवासी हिंदी लेखकों की रचनाओं में यथार्थपरक दर्शन के साथ संस्कृतियों की टकराहट और भूमंडलीकरण का दबाव दिखाई पड़ता है। भारतीय एवं पश्चिमी संस्कृति के बीच झूलते प्रवासी भारतीयों के मानसिक आन्दोलन का चित्रण प्रवासी हिंदी साहित्य में हुआ है। प्रवासी भारतीय समाज की सच्चाई को पूरी अन्तरंगता से उद्घाटन करने वाले बहुतेरे कथाकार यथा कृष्णलाल बिहारी, अभिमन्यु अनत, जोगिन्द्र सिंह कंवल,विवेकानन्द शर्मा, हरिदेव सहतू, पुष्पिता अवस्थी, वेद प्रकाश बटुक, सुषम बेदी, अंजना संधीर, गौतम सचदेव, तेजेन्द्र शर्मा, पदमेश गुप्त, अचला शर्मा हैं जिन्होंने प्रवासी जावन के अनुभवों व गहन सोच का परिचय दिया है जिससे हिन्दी साहित्य का अन्तर्राष्ट्रीय विकास संभव हुआ है। हिन्दी में रचे जा रहे प्रवासी साहित्य का अपना वैशिष्ट्य है जो उसकी संवेदना, परिवेश, जीवन दृष्टि तथा सरोकारों में दिखाई देता है।

बीज शब्दः– संवेदना, परिवेश, हिंदी साहित्य, अन्तर्राष्ट्रीयकरण, संस्कृतियों की टकराहट, प्रवासी कथाकार।

मूल प्रतिपादनः–प्रवास अन्तर्राष्ट्रीय, अंतःप्रदेशीय तथा अन्तर्नगरीय होता है जिसकी प्रवृत्ति स्थाई तथा अस्थाई होती है। इसी तरह प्राकृतिक आपदाओं, जलवायु परिवर्तन, महामारियाँ और सूखे से लेकर सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा जलवायु आदि कारणों से प्रवास होता है। जिस स्थान विशेष को छोड़कर कोई व्यक्ति विशेष या मानव समुदाय दूसरे स्थानों की ओर प्रवसन कर जाते हैं वहाँ के निवासी विस्थापित व्यक्ति या मानव समुदाय को 'प्रवासी' शब्द से संबोधित करते हैं। अतः विकासशील देशों से विकसित देशों की तरह प्रवास अधिक होता है जिसका कारण है विकासशील देशों में रोजगार के उपयुक्त एवं कम अवसर तथा विकसित देशों की चकाचौंध एवं बेहतर जीवन। यहाँ तक कि श्रमिकों की एक बड़ी संख्या पैसा कमाने की होड़ में खाड़ी देशों की ओर पलायन कर रही है। आजादी से पूर्व हुए प्रवास के कारण आज कई देशों में प्रवासी भारतीयों की अगली पीढ़ी अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। मॉरीशस की आधे से अधिक जनसंख्या भारतीय मूल के लोगों की है। इसके अतिरिक्त फिजी, सूरीनाम, दक्षिण अफ्रीका, त्रिनिदाद एवं टोबैगो में भी भारतीय मूल के लोगों की आबादी एक तिहाई से अधिक है।[1] इन देशों में भारतीय मूल के लोग सर्वोच्च पद पर भी आसीन हो चुके हैं। आजादी के बाद गए प्रवासी भारतीय भारत की अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा योगदान दे रहे हैं।

भूमंडलीकरण से प्रवास की प्रक्रिया एवं प्रवासी हिंदी साहित्य में भी विस्तार हुआ। हिंदी साहित्य में जिस प्रभावशाली ढंग से विदेशों में लिखे जाने वाले हिंदी साहित्य को पिछले दो–तीन दशकों में पहचान मिली है इसका कारण प्रवास की प्रक्रिया में आई निरन्तरता, भूमंडलीकरण, विश्व बाजार, दूर संचार, कंप्यूटर क्रांति के साथ–साथ विश्वभर में फैले हिंदी के रचनाकारों का विभिन्न माध्यमों से साहित्यिक जुड़ाव व विचार विमर्श है।[2] प्रवासी भारतीय सम्मेलनों एवं विश्व हिंदी सम्मेलनों ने प्रवासी भारतीयों एवं प्रवासी हिंदी साहित्य से भी लोगों को परिचित होने का मौका दिया। हिंदी साहित्य पर भी इसका सकारात्मक परिणाम हुआ। पत्रिकाओं द्वारा प्रवासी अंक निकाला जाना, प्रवासी रचनाकारों का सम्मेलन, प्रवासी पुरस्कार आदि प्रवासी हिंदी साहित्य की सत्ता और महत्ता को इंगित कर रहे हैं।

प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवास प्रक्रिया का वैचारिक प्रारम्भ मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'यह मेरी जन्मभूमि है' से माना जा सकता है। प्रेमचंद की एक अन्य कहानी 'शूद्रा' मॉरीशस के गिरमिटिया मजदूरों के जीवन पर आधारित है। हिंदी की पहली कालजयी कहानी चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था' में प्रवासी भारतीय सैनिकों की एक छवि प्रस्तुत की गई है, जोकि प्रथम विश्व युद्ध में राष्ट्रों की तरफ से जर्मन सेनाओं के विरुद्ध लड़ रही है। 'गोदान' में धनिया–गोबर वार्तालाप में भी मारीच देश का उल्लेख हुआ है जो मॉरीशस का ही अपभ्रंश रूप है।

विदेशी पृष्ठभूमि ने हिंदी रचना क्षेत्र को विस्तृत फलक दिया है। प्रवासी हिंदी रचनाकारों ने साहित्य के माध्यम से हिंदी और उसके साहित्य को वैश्विक आधार दिया है बल्कि भारत में भी हिंदी साहित्य को दिशा प्रदान करने में अहम भूमिका भी निभाई है। अमेरिका में प्रवासी हिंदी रचनाकार देवी नागरानी प्रवासी हिंदी साहित्य के महत्त्व को बताते हुए लिखती हैं ''हिंदी का साहित्य विश्व में हिंदी की अन्तर्राष्ट्रीयता को बुलंदी के साथ स्थापित कर रहा है इस बात में कोई शंका नहीं। चाहे वह मॉरीशस का हिंदी साहित्य हो या अमेरिका का, सूरीनाम का हो या इंग्लैंड का। हिंदी साहित्य की हर धारा उसी में मिलकर एक राष्ट्रीय भाषा हिंदी की सरिता बनकर बहेगी तभी वह सैलाब अन्तर्राष्ट्रीय धरातल पर अपना स्थान पा सकेगा। प्रवासी हिंदी साहित्य हिंदी के अन्तर्राष्ट्रीयकरण का सबसे सशक्त मार्ग है।''[3] यमुनानगर प्रवासी हिंदी सम्मेलन में पूर्णिमा वर्मन ने कहा 'हिंदी साहित्य को विश्व के कोने–कोने में पहुँचाने और विश्व का कोना–कोना हिंदी साहित्य में लाने का महत्वपूर्ण काम केवल प्रवासी साहित्य के जरिए संभव है।'[4]

हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने में प्रवासी हिंदी रचनाकारों के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। प्रवास में लिखे जा रहे हिंदी साहित्य की अपनी अलग संवेदना है। उसमें भारतीय मन है और साथ ही उसकी अपनी विशिष्ट प्रवासी सोच है। वस्तुतः प्रवासी हिंदी साहित्यकार संवेदन संस्कार के रूप में अपने परिवेश को ग्रहण करते हैं। अतः प्रवासी हिंदी लेखक जब अपने घर–परिवार और मिट्टी से अलग होकर एक अन्य देशकाल और परिवेश में चला जाता है तो वहाँ उनके नए संस्कार बनते हैं, नए दृष्टिकोण बनते हैं। प्रवासी हिंदी लेखकों की रचनाओं में सोच, संवेदना, यथार्थपरक दर्शन के साथ संस्कृतियों की टकराहट और भूमंडलीकरण का दबाव दिखाई पड़ता है। प्रवासी हिंदी साहित्य के मूल में जिस अकुलाहट, बेचैनी को महसूस किया जाता है उसे परम्परा एवं अपनी संस्कृति से कटने के संदर्भ में समझा जा सकता है। भारतीय एवं पश्चिमी संस्कृति के बीच झूलते प्रवासी भारतीयों के मानसिक आन्दोलन का चित्रण प्रवासी हिंदी साहित्य में हुआ है। कमल किशोर गोयनका के अनुसार ''हिंदी के प्रवासी साहित्य का रूप–रंग, उसकी चेतना और संवेदना भारत के हिंदी पाठकों के लिए एक नई वस्तु है, एक नये भावबोध का साहित्य है, एक नयी व्याकुलता और बेचैनी का साहित्य है जो हिंदी साहित्य को अपनी मौलिकता एवं नये साहित्य संसार से समृद्ध करता है। इस प्रवासी साहित्य की बुनियाद भारत–प्रेम तथा स्वदेश–परदेस के द्वन्द्व पर टिकी है तथा बार–बार हिन्दू जीवन मूल्यों तथा सांस्कृतिक उपलब्धियों तथा उनके प्रति श्रेष्ठता के भाव की अभिव्यक्ति होती है।''[5]

विदेशों में बसे प्रवासी लेखकों की रचनाओं में प्रवास की पीड़ा बखूबी बयाँ होती है। विपरीत परिस्थितियों में भी वे कालजयी रचनाओं का सृजन कर रहे हैं। यही रचनाएँ उनके प्रवासी होने के दर्द को विश्व पटल पर रखती हैं। सच्चाई यह भी है कि सूरीनाम, फिजी, मॉरीशस, कैरेबियन आदि देशों में बँटे आप्रवासी भारतीयों ने लेखन के माध्यम से वहाँ देशी संस्कृति को संभाल रखा है। प्रवासी हिंदी रचनाकारों ने न केवल विदेशों में रह रहे भारतीय समाज के जीवन शैली को अभिव्यक्त किया है बल्कि उनके जीवन संघर्षों और सुख–दुख पर भी कलम चलाई है।[6]

मॉरीशस में हिंदी उपन्यास का प्रारम्भ कृष्णलाल बिहारी के उपन्यास 'पहला कदम' से माना जाता है। कालान्तर में अभिमन्यु अनत का 'और नदी बहती रही' प्रकाशित हुआ जबकि अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में आन्दोलन,एक बीघा प्यार, जम गया सूरज, तीसरे किनारे पर, चौथा प्राणी, तपती दोपहरी, लाल पसीना, कुहासे का दायरा, हड़ताल कब होगी, चुन–चुन चुनाव, अपनी ही तलाश, पर पगडंडी नहीं मरती, अपनी अपनी सीमा, गांधी जी बोले थे, मार्क ट्वेन का स्वर्ग,फैसला आपका, जै गाँव का बहादुर, मुड़िया पहाड़ बोल उठा, शब्द–भंग, अचित्रित और पसीना बहता रहा, लहरों की बेटी, घर लौट चलो वैशाली, चलती रहो अनुपमा, आसमान अपना आँगन, अस्ति अस्तु, एक उम्मीद और, क्यों न फिर से, हम प्रवासी, अपना मन उपवन आदि उल्लेखनीय हैं। कमल किशोर गोयनका अभिमन्यु अनत को 'उपन्यास सम्राट' तथा 'मॉरीशस के प्रेमचंद' जैसे विशेषण से विभूषित करते हुए लिखते हैं–''अनत में सामयिक यथार्थ की अभिव्यक्ति के साथ महाकाव्यात्मक प्रतिभा है जो अपने समाज की संस्कृति, अस्मिता, अस्तित्व तथा स्वाधीनता के महत संघर्ष का जीवन्त चित्रण करती है।''[7] अनत ने अपने देश के गूँगे चीखते इतिहास को इसी कारण 'लाल पसीना', 'गांधी जी बोले थे' तथा 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास–त्रयी को प्रस्तुत किया, जो महाकाव्यीय उर्जा एवं संघर्ष से परिपूर्ण है। मॉरीशस की भूमि, वहाँ की भू–संस्कृति, भूमि संतान, भू–श्रमिक, भू–अंचल सभी अनत की आत्मा के अंग हैं। विरोधी क्रियाकलापों तथा औपनिवेशिक दबाव एवं विसंस्कृतिकरण की दुष्प्रवृतियों को भी बराबर निरावृत्त करते हैं। अभिमन्यु अनत के बारे में राजेन्द्र यादव का कथन है ''अभिमन्यु अनत सक्रिय और उर्वर लेखक हैं और उसने अनेक उपन्यासों में इस कथ्य को पकड़ा है, उसके पास बेहद सशक्त भाषा है और वातावरण को सजीव कर देने वाला मुहावरा।''[8] हिंदी साहित्य में अनत अपने महाकाव्यात्मक उपन्यास 'लाल पसीना' से प्रतिष्ठित हुए। यह उपन्यास प्रवासी भारतीय मजदूरों का कारुणिक इतिहास है। मॉरीशस के इन्द्रधनुषी जीवन के रूपरंग को यथार्थ रूप में चित्रित करता है और उसमें भारतवंशी समाज का दर्द, उसकी व्यथा एवं संत्रास, शोषण तथा अत्याचार, संघर्ष एवं बलिदान, दासता और स्वतंत्रता, अंधविश्वास तथा जड़ता, रीति–संस्कार, परम्परा और आधुनिकता, अस्तित्व और अस्मिता, संकट और चुनौती तथा आशाएं एवं संभावनाओं का अत्यंत जीवंत चित्र मिलता है।[9]

फिजी में औपचारिक एवं मानक हिंदी का प्रयोग पाठशाला के अलावा शादी, पूजन, सभा आदि अवसरों पर होता है। फिजी के संविधान में हिंदी भाषा को मान्यता प्राप्त है। कोई भी व्यक्ति सरकारी कामकाज, अदालत तथा संसद में भी हिंदी भाषा का प्रयोग कर सकता है। फिजी के हिंदी उपन्यास को समद्ध करने वालों में जोगिन्द्र सिंह कंवल का योगदान महत्वपूर्ण है। जोगिन्द्र सिंह कंवल ने फिजी में प्रवासी भारतीयों के जीवन को आधार बनाकर कुल चार उपन्यास 'सवेरा', 'धरती मेरी माता', 'करवट' तथा 'सात समुद्र पार' की रचना की है। 'सवेरा' और 'सात समुद्र पार' का संबंध फिजी गए प्रवासी भारतीयों के जीवन से संबंधित है।[10] 'सवेरा' का कथानक गिरमिटिया मजदूर के रूप में फिजी भेजे गए लोगों से संबंधित है जो फिजी के गन्ने की खेतों में और चीनी मिलों में काम करने के लिए अभिशप्त हैं। उन्हें जिन शारीरिक एवं मानसिक यंत्रणा, शोषण तथा अंग्रेजों के वफादार भारतीयों की पाश्विकता का शिकार होना पड़ा उन सबका मर्मस्पर्शी चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। 'सात समुद्र पार' विदेशी चकाचौंध से प्रभावित निर्मला के फिजी पहुँचने पर उसके दुर्दशा की कहानी है जो जिन्दा रहने के लिए पल–पल संघर्ष करती है। विवेकानन्द शर्मा का उपन्यास 'अनजान क्षितिज की ओर' गिरमिटिया भारतीयों के जीवन पर आधारित है। कमला प्रसाद मिश्र, काशीराम कुमुद, महावीर मिश्र, बाबू हरनाम सिंह, महेन्द्र चंद्र शर्मा, ज्ञानी दास, ईश्वरी प्रसाद चौधरी, रामनारायण, सलीम बख्श, अनुभवानंद आनंद, पं. हरीश शर्मा, बलिराम वशिष्ट,

बाबू कुँअर सिंह, सुखराम, रामावतार गुप्त, अमरजीत कंवल, विजयेन्द्र सुधाकर, राघवानन्द शर्मा, सरस्वती देवी, चन्द्रदेव सिंह, राम नारायण गोविन्द फिजी के काव्य रचनाकार हैं।[11]

सूरीनाम के साहित्य का इतिहास जानने के लिए पंडित हरिदेव सहतू का शोध कार्य महत्त्वपूर्ण है। सूरीनाम में प्रो. पुष्पिता अवस्थी ने सूरीनाम के हिंदी साहित्य को भारत की मुख्यधारा के हिंदी साहित्य से जोड़ने का काम किया। उनकी रचना 'कविता सूरीनाम' तथा 'कथा सूरीनाम'में प्रवासी भारतीयों के जीवन, संघर्ष तथा हिंदी के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। अज्ञेय जी अपने जीवन का काफी समय पश्चिमी देशों में बिताया। उसी दौरान उन्होंने कई रचनाएं हिंदी में लिखी और कुछ रचनाओं की प्रेरणाभूमि पश्चिमी जीवन से ही मिली। 'अपने–अपने अजनबी' 'इन्द्र धनुष रौंदे हुए थे' की प्रेरणा पश्चिमी जीवन ही है। जहाँ एक ओर परम्परा बोध से मुक्त कर आधुनिकता के आग्रही पश्चिम के सामने रखते रहे वहीं दूसरी ओर इनका चित्त बराबर देश में रहा।[12]

वेद प्रकाश 'बटुक' ने अमेरिका के कई विश्वविद्यालयों में शिक्षण कार्य किया व साथ ही 'नचिकेता', 'इंडियन वॉयस' पत्रिकाओं का संपादन भी किया। उनके प्रकाशित काव्य संग्रह 'त्रिविध' 'बंधन अपने देश पराया', 'कैदी भाई बंदी देश', 'आपात शतक,'नीलकंठ न बन सका','एक बूँद और', 'कल्पना के पंख पाकर' 'लौटना घर के बनवास में', 'रात का अकेला सफर', 'नए अभिलेख का सूरज', 'बाँहों में लिपटी दूरियाँ', 'सहस्रबाहु', 'अनुगूंज', 'इतिहास की चीख', 'कुरसी शतक', 'बाहुबली,'उत्तर रामकथा,'प्रेम कविताएं' मुख्य हैं।

सुषम बेदी 1985 से कोलंबिया विश्वविद्यालय, न्यूयार्क में हिंदी साहित्य की प्रोफैसर हैं। इनकी रचनाएं हिंदी की कई विधाओं में है। इनके उपन्यास में–'हवन', 'लौटना', 'नवाभूम की रस कथा', 'गाथा अमरबेल की', 'कतरा दर कतरा', 'इतर', 'मोरचे', 'मैंने नाता तोड़ा', दो कहानी संग्रह 'चिड़िया और चील', 'सड़क की लय' तथा एक काव्य संग्रह 'शब्दों की खिड़कियाँ' भी प्रकाशित हैं। इनकी रचनाओं में भारतीय और पश्चिमी संस्कृति के बीच प्रवासी भारतीयों के मानसिक आन्दोलन का चित्रण हुआ है। अपने लेखन के बारे में बताती हैं 'लिखने के मूल में मेरा भारत छोड़कर चले आना ही था। यहाँ के अलग तरह के अनुभव, नए तरह का रहन–सहन, नए तरह के लोग, भाषा संस्कृति, भारत की स्मृतियाँ और नॉस्टेल्जिया–सभी मेरे अंतर्मन को आन्दोलित करते रहते थे। मुझे मानवीय रिश्तों, रिश्तों के बीच व्यक्ति की अपनी पहचान, मानव मन की गुत्थियाँ, उलझनों को समझने की, उनकी पड़ताल में गहरे उतरते चले जाने में हमेशा रुचि रही है। लोगों को उन विसंगतियों को जीते देखा है, उन विडम्बनाओं को देखा है, उन्हीं में से चरित्र उठाये हैं और पहचानी स्थितियों में उतरकर चरित्रों का विकास किया है। जितना नजदीक जाती हूँ उतना ही उसकी विसंगतियाँ देखती हूँ और उन्हीं के जरिए मैं जिन्दगी के यथार्थ पकड़ने की कोशिश करती हूँ।[13]

अंजना संधीर की रचनाओं में 'अमेरिका हड्डियों में बस जाता है', 'धूप छाँव और आंगन', बारिशों का मौसम', 'तुम मेरे पाप जैसे नहीं हो' 'सात समुद्र पार से', 'मैं कश्मीर हूँ', प्रवासी हस्ताक्षर' और 'प्रवासी आवाज़' आदि प्रकाशित हैं। अमेरिका के अन्य रचनाकारों में पुष्पा सक्सेना 'अलविदा', 'उसके हिस्से का पुरुष', 'सूर्यास्त के बाद', 'उसका सच', 'पीले गुलाबों के साथ एक रात', 'वह सांवली लड़की 'क्षितिज की सन्तान' रेणु राजवंशी गुप्ता कृत 'प्रवासी स्वर', 'प्रवासी मन', 'कौन कितना निकट', 'जीवन लीला', सुधा ओम धींगरा कृत 'मेरा दावा', 'तलाश पहचान की' सुनीता जैन कृत 'बोज्यो' 'सफर के साथी' आदि मुख्य हैं।

सत्येन्द्र श्रीवास्तव कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में 25 वर्ष अध्यापन के बाद अब अवकाश प्राप्त कर चुके हैं। उन्होंने 'जलतरंग', 'एक किरण एक फूल', 'स्थिर यात्राएं', 'मिसेज जोन्स और उनकी गली', 'कुछ कहता है यह समय', 'सतह की गहराई', 'टेम्स में बहती गंगा की धार' आदि उनकी उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। गौतम सचदेव भी बी.बी.सी लन्दन हिंदी सेवा में दो दशकों से अधिक समय तक रहे तथा कुछ समय तक कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हिंदी साहित्य का अध्यापन किया।[14] इनकी प्रमुख रचनाओं में 'अधर का पुल', 'एक और आत्मसमर्पण' ;कविता संग्रह तथा 'साढ़े सात दर्जन पिंजरे', 'सच्चा–झूठ' नामक कहानी संग्रह उल्लेखनीय है। पदमेश गुप्त ने हिंदी समिति एवं 'पुरवाई' पत्रिका के माध्यम से हिंदी को ब्रिटेन में प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी प्रकाशित रचनाएं 'दूर बाग में सौंधी गंध, 'आकृति', 'सागर का पंक्षी' मुख्य हैं। तेजेन्द्र शर्मा की प्रकाशित कृतियाँ 'काला सागर','ढिबरी लाइट', 'देह की कीमत', 'ये क्या हो गया', 'बेघर आँखें'। इनकी रचनाओं में ब्रिटेन के आधुनिक, बहुसांस्कृतिक समाज की छवि स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। तेजेन्द्र शर्मा ने ब्रिटेन की संसद के हाउस ऑफ कामन्स एवं हाउस ऑफ लॉर्डस में कथा यू.के. के तत्वावधान में 'इन्दु शर्मा कथा सम्मान' एवं 'पदमानंद साहित्य सम्मान' आयोजित कर अंग्रेजी के गढ़ में हिंदी की पताका फहराई है। अचला शर्मा के अनुसार तेजेन्द्र ने हिंदी को मंदिरों से निकाल कर ब्रिटिश संसद में पहुँचा दिया है। विदेश में रहने वाले भारतीयों के दर्द, रिश्तों की विसंगतियों और भावनाओं पर प्रकाश डाला गया है तथा प्रवासी भारतीयों के जन–जीवन की उथल–पुथल और विसंगतियों का चित्रण मिलता है।[15] ब्रिटेन में पाँच हिंदी उपन्यासकारों का उल्लेख मिलता है यथा विजया मायर 'रिश्तों का बंधन', प्रतिभा डाबर 'वो मेरा चाँद' और 'दो चम्मच चीनी, भारतेन्दु विमल 'सोन मछली' नीना पॉल 'रिहाई', 'तलाश' तथा नरेश भारती 'दिशाएं बदल गई' आदि।

अचला शर्मा लन्दन में रहने वाली भारतीय मूल की हिंदी लेखिका हैं। बी.बी.सी. हिंदी सेवा में जुड़ने के पश्चात उनके व्यस्त जीवन में कहानी, कविता थोड़े पीछे छूट गये, वहीं हर वर्ष रेडियो नाटक लिखना उनके रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा बन गया। इन रेडियो नाटकों के संकलन की जोड़ी 'पासपोर्ट' एवं 'जड़ें' के लिए वर्ष 2004 के पद्मानन्द साहित्य सम्मान से उन्हें सम्मानित किया गया। सुरीनाम विश्व हिंदी सम्मेलन में अचला शर्मा को ब्रिटेन के हिंदी साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए भी सम्मानित किया गया। उनके रेडियो नाटकों में प्रवासी भारतीयों की दूसरी एवं तीसरी पीढ़ी की मानसिकता एवं संघर्ष का सटीक चित्रण देखने को मिलता है। उन्हीं के शब्दों में 'विदेश में रहते हुए मैंने प्रवास की समस्याओं को नजदीक से देखा, समझा और भोगा है,पश्चिमी समाज में रहकर अपनी पहचान को कायम रखने की जद्दोजहद एक बड़ी चुनौती रही है।'

विदेश में रहने वाले रचनाकारों का महत्त्व इसलिए बढ़ जाता है कि उनकी रचनाओं में अलग अलग देशों की विभिन्न परिस्थितियों का उल्लेख मिलता है जिससे हिन्दी साहित्य का अन्तर्राष्ट्रीय विकास होता है। हिन्दी में रचे जा रहे प्रवासी साहित्य का अपना वैशिष्ट्य है जो उसकी संवेदना,परिवेश,जीवन दृष्टि तथा सरोकारों में दिखाई देता है। इस प्रकार प्रवासी हिन्दी साहित्य में किसी न किसी रूप में भारत विद्यमान है। प्रवासी हिंदी साहित्य की अपनी अलग संवेदना, विशिष्ट प्रवासी सोच है जोकि संस्कार के रूप में अपने परिवेश को ग्रहण करते हैं जिससे उनके दृष्टिकोण का आभास मिलता है। प्रवासी हिंदी लेखकों की रचनाओं में सोच, संवेदना, यथार्थपरक दर्शन के साथ संस्कृतियों की टकराहट और भूमंडलीकरण का दबाव दिखाई पड़ता है। भारतीय एवं पश्चिमी संस्कृति के बीच झूलते प्रवासी भारतीयों के मानसिक आन्दोलन का चित्रण प्रवासी हिंदी साहित्य में हुआ है। प्रवासी भारतीय समाज की सच्चाई को पूरी अन्तरंगता से उद्घाटन करने वाले बहुतेरे कथाकार यथा कृष्णलाल बिहारी, अभिमन्यु अनत, जोगिन्द्र सिंह कंवल,विवेकानन्द शर्मा, हरिदेव सहतू, पुष्पिता अवस्थी, वेद प्रकाश 'बटुक, सुषम बेदी, अंजना संधीर, गौतम सचदेव, तेजेन्द्र शर्मा, पदमेश गुप्त, अचला शर्मा हैं जिन्होंने प्रवासी जीवन के अनुभवों व गहन सोच का परिचय दिया है जिससे हिन्दी साहित्य का अन्तर्राष्ट्रीय विकास संभव हुआ है। हिन्दी में रचे जा रहे

प्रवासी साहित्य का अपना वैशिष्ट्य है जो उसकी संवेदना, परिवेश, जीवन दृष्टि तथा सरोकारों में दिखाई देता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अरविंद मोहन, प्रवासी भारतीयों की पीड़ा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली 1998।
2. सुधीश पचौरी, भूमंडलीकरण और उत्तर सांस्कृतिक विमर्श, आनन्द प्रकाशन, नई दिल्ली 2006
3. उषाराजे सक्सेना, विदेशों में हिंदी साहित्य, नया ज्ञानोदय, दिसम्बर 2008
4. कमल किशोर गोयनका, अभिमन्यु अनतः एक बातचीत, ज्ञानभारती, दिल्ली 1985 ।
5. कमल किशोर गोयनका, विश्व हिंदी रचना, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली, 2003।
6. रोहिणी अग्रवाल, समकालीन कथा साहित्य, सरहदें और सरोकार, आधार प्रकाशन, पंचकूला, 2007।
7. हेमराज निर्मम, मॉरीशस के हिंदी उपन्यासों का मूल्यांकन, प्रेम प्रकाशन मंदिर, दिल्ली, 1993।
8. राजेन्द्र यादव, उपन्यास स्वरूप और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007।
9. बीरसेन सिंह जागा सिंह, मॉरीशस में हिंदी एक सिंहावलोकन, गगनांचल जुलाई–सितम्बर 2004।
10. जोगिन्द्र सिंह कंवल, फिजी में हिंदी काव्य साहित्य, भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद, नई दिल्ली 2004 ।
11. अज्ञेय सं. विद्या निवास मिश्र, राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 2008।
12. शुचि गुप्ता, फिजी में प्रवासी भारतीय, हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर 2010।
13. सुषम बेदी, प्रवासी भारतीयों का साहित्यिक उपनिवेशवाद, हंस, अक्टूबर 2000।
14. जोगिन्द्र सिंह कंवल, फिजी में हिंदी काव्य साहित्य, भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद, नई दिल्ली 2004।
15. तेजेन्द्र शर्मा, प्रवासी भारतीयों की वर्तमान पीढ़ी, प्रवासी संसार, जनवरी–मार्च 2005

Net Sources

1. www.pravasiduniya.com/tag/pravasi-sahityakar
2. www.pravasiduniya.com/tag/hindi-sahitya
3. *www.thepoeticheart.com/poets/ms-purnima-varman/*
4. https://en.wikipedia.org/wiki/Susham_Bedi
5. www.hindisamay.com/.../अभिमन्यु-अनत.cspx*?*.
6. www.pravasiduniya.com/.../abhimanyu-anat-mauritius.
7. www.hindisamay.com/writer/तेजेंद्र-शर्मा.csp...
8. www.pravasiduniya.com/tag/tejender-sharma.
9. https://in.linkedin.com/pub/achala-sharma/a8/b61/439
10. www.hindiinamerica.com/Literary%20Contributions.html